

दर किनार क्रि.वि. (फा.) अलग, जुदा।

दरकीला वि. (फा.) 1. भरपूर 2. आसानी से टूटने वाला।

दरखत पुं. (फा.) दे. दरख्त।

दरखाना स.क्रि. (तद्.) 1. दिखलाना 2. स्पष्ट करना, समझाना।

दरखास्त स्त्री. (फा.) प्रार्थना, प्रार्थनापत्र, अर्जी।

दरख्त पुं. (फा.) पेड़, वृक्ष।

दरगाह स्त्री. (फा.) 1. चौखट, देहरी 2. दरबार 3. किसी सिद्ध पुरुष की समाधि, मजार जैसे निजामुद्दीन ओलिया की दरगाह।

दरज स्त्री. (तत्.) दरार, चीर शिगाफ प्रयो. अब दोनों के दिलों में दरज पड़ गई है यौ. दरज बंदी- दीवार की दरारों को भरने का काम।

दरजन पुं. (अर.) दे. दर्जन।

दरजा पुं. (अर.) दे. दर्जा।

दरजिन स्त्री. (देश.) दे. दर्जिन।

दरजी पुं. (फा.) दे. दर्जी।

दरण पुं. (तत्.) 1. दलने या पीसने की क्रिया 2. पीसने की क्रिया, विदारण।

दरणि पुं. (तत्.) 1. प्रवाह 2. लहर 3. भँवर।

दरत स्त्री. (तत्.) 1. पर्वत, पहाड़ 2. बाँध 3. झरना, प्रपात 4. डर, भय।

दरद पुं. (तत्.) 1. काश्मीर और हिंदु कुश पर्वत के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम 2. एक जाति, जिसका उल्लेख शास्त्रों में मिलता है (फा.) 1. पीड़ा, दर्द, कष्ट दे. दर्द वि. (तत्.) भयंकर, भयदायक।

दरदबंद वि. (फा.) 1. दुखी, व्यथित 2. दयालु, कृपालु।

दरदमंद वि. (फा.) 1. दुखी 2. दयालु।

दरदर क्रि.वि. (फा.) दरवाजे-दरवाजे, जगह-जगह प्रयो. वह आजकल दर-दर मारा फिर रहा है।

दरदरा वि. (तद्.) जो मोटा पीसा गया हो, जिसके कण महीन या बरीक न हो।

दरदराना स.क्रि. (तत्.) किसी वस्तु को बहुत महीन न पीसना।

दरदी वि. (फा.) दुखी, पीड़ित।

दरना स.क्रि. (तद्.) 1. दलना, पीसना 2. नष्ट करना, ध्वस्त करना।

दरप पुं. (तद्.) दे. दर्प।

दरपन पुं. (तद्.) 1. आइना, आरसी 2. दर्पण।

दरपना अ.क्रि. (तत्.) 1. गुस्सा करना, ताव में आना 2. घमंड करना, अहंकार करना।

दरपनी स्त्री. (तद्.) मुँह देखने का छोटा शीशा, छोटा आईना।

दरपित वि. (तद्.) दे. दर्पित।

दरब पुं. (तद्.) 1. द्रव्य, धन 2. खरी धातु 3. किनारेदार मोटी चादर।

दरबा पुं. (फा.) 1. कबूतरो-मुर्गियों आदि पक्षियों को रखने का खानेदार संदूक 2. पेड़ का खोखला भाग, कोटर, जिसमें पक्षी रहता है।

दरबान पुं. (फा.) द्वारपाल।

दरबार पुं. (फा.) 1. वह स्थान जहाँ सरदार या बादशाह की कचहरी लगती हो 2. राजसभा, कचहरी यौ. दरबारदार-चापलूस, खुशामदी मुहा. दरबार करना- राजसभा में बैठना; दरबार लगाना- राजसभा के सभासदों का एकत्रित होना 3. महाराज, राजा 4. स्वर्ण मंदिर (सिक्खों का गुरुद्वारा) प्रयो. उन्होंने दरबार साहब में मत्था टेका।

दरबारदारी स्त्री. (फा.) 1. दरबार में हाजरी, राजसभा में उपस्थिति 2. किसी के पास जाकर बैठने या खुशामद करने का काम।

दरबार साहब पुं. (फा.+अर.) अमृतसर में सिक्खों का पवित्र तीर्थ स्थल जहाँ सिक्खों का धर्म ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहब रखा हुआ है।

दरबारी पुं. (फा.) 1. राजसभा का सभासद 2. दरबार में बैठने वाला वि. दरबार का 2. दरबार से संबंध रखने वाला।